आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज का जीवन परिचय

पूर्व नाम : पारसचंद जैन
पिता एवं माता : श्री शिखरचंद जैन, श्रीमती मायाबाई जैन
जन्म : 11 सितम्बर 1967, फुटेरा कलां, जिला दमोह (मध्यप्रदेश)
शिक्षा : बी.ए., डिग्री कॉलेज, दमोह (मध्यप्रदेश)
ब्रह्मचर्य व्रत : 19 दिसम्बर 1984, अतिशय क्षेत्र, पनागर, जबलपुर (मध्यप्रदेश)
क्षुल्लक दीक्षा : 8 नवंबर 1985, सिद्धक्षेत्र अहारजी, टीकमगढ़ (मध्यप्रदेश)
ऐलक दीक्षा : 10 जुलाई 1987, अतिशय क्षेत्र थूबोन जी, अशोकनगर (मध्यप्रदेश)
मुनि दीक्षा : 31 मार्च 1988, महावीर जयंती, सिद्धक्षेत्र सोनागिरि जी, दतिया (मध्यप्रदेश)
दीक्षा गुरु : संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज
आचार्य पद : 25 जनवरी 2015, इंदौर (समाधि पूर्व आचार्य श्री सीमंधरसागर जी महाराज द्वारा)

कृतियाँ एवं रचनाएँ

आचार्यश्री की साहित्य साधना अत्यंत व्यापक और प्रेरणादायी है। उन्होंने दो दर्जन से अधिक कृतियों का सृजन किया है, जिनके माध्यम से आचार्य श्री ने जैन दर्शन के गूढ़ तत्त्वों को सरल और व्यवहारिक रूप में समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है।

1. **आगम ग्रंथ**- आगम अनुयोग भाग (1-2), जैनागम संस्कार (हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती, तमिल, कन्नड़), आध्यात्मिक प्रवचन, पर्युषण पीयूष।

2. **काव्य व शतक**- तीर्थोदय काव्य, सदाचार सूक्ति काव्य, मोक्षप्रदायक काव्य (आत्मोद्धार शतक, सन्मार्ग प्रभावना काव्य, तीर्थंकर स्तुति शतक, सम्यक् ध्यान शतक, श्री अंतादि शतक, गुरु-गुण महिमा काव्य, आशीर्वाद शतक, धर्म भावना शतक, अध्यात्म समयोदय काव्य), ज्ञान वर्धन काव्य आदि।

3. **पद्यानुवाद**- पद्यानुवाद मंजरी (गोम्मटेश थुदी, भक्तामर स्तोत्र, द्रव्यसंग्रह, इष्टोपदेश, समाधितंत्र, वारसाणुवेक्खा, तत्त्वसार, प्रश्नोत्तर रत्नमालिका)।

4. **अन्य विशेष**- आर्जव कविताएँ, लोक कल्याण विधान, ॐ योग ध्यान आदि।

विशेष उपलब्धियाँ-

आचार्य श्री को Chania International University द्वारा भारतीय दर्शन, जैन आगम के प्रचार-प्रसार एवं सामाजिक जागरण के क्षेत्र में किए गये अद्वितीय योगदान हेतु Docotrate of Philosophy की मानद उपाधि प्रदान की गई एवं America international University द्वारा Doctorate of Literature(D.Litt.) की उपाधि प्रदान की गई। डॉ. आचार्य श्री आर्जवसागर जी को अनेक आध्यात्मिक, साहित्यिक एवं मानवीय योगदान के लिए यूएसए, लंदन, एशियन, यूएन, इंडिया, गिनीज, इंटरनेशनल, वर्ल्ड वाइड, लिमका बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड के संस्थानों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सम्मान से अलंकृत किया गया है। इसके

माध्यम से पूरे विश्व में आचार्य भगवन् की कृतियों की कीर्ति सर्वव्यापी फैली है। अनेक संस्थाओं द्वारा आपको ''चारित्र शिरोमणि'', ''ब्रह्माण्ड के देवता'', ''जैन धर्म के गौरवान्वित संत'', ''अहिंसक प्रचारक'', ''आध्यात्मिक संत'', ''आहारौषध विज्ञान के ज्ञाता'', ''साहित्यिक प्रतिभा संपन्न'', ''20 वीं सदी के हिंदी साहित्य के, सर्वोच्च शिखर'', ''विश्व के भगवान'', करुणा के सागर, अहिंसा के पुजारी, तमिल देश के उद्धारक संत, महावीर प्रतिमूर्ति, विद्या गुरु से दीक्षित बुंदेलखण्ड के प्रथमाचार्य, बहुभाषाविद् ''वर्ल्ड गॉड'' जैसी उपाधियाँ देकर जैसी उपाधियां देकर स्वर्ण भारत सम्मान, राष्ट्रीय प्रतिष्ठा पुरस्कार, भारतीय रत्न अवार्ड, पद्म श्री गौरव सम्मान, भारत गौरव रत्न, भारत प्रतिभा सम्मान, नेशनल अवार्ड, प्रेरणा सम्मान, भारतीय उत्कृष्टता सम्मान, नव भारत सेवा रत्न सम्मान, ग्लोबल अचीवर्स अवार्ड, अंतर्राष्ट्रीय उत्कृष्टता पुरस्कार, समाज सेवा आदर्श रत्न पुरस्कार, विजीनरी लीडर अवार्ड, विजय रत्न सम्मान, विद्या रत्न सम्मान, पीएम मोदी विजन ऑफ भारत अवार्ड, श्रेष्ठ रत्न सम्मान, भारत स्वाभिमान, विजय गौरव सम्मान, स्टार ऑफ द ग्लोब अवॉर्ड, अखंड भारत सम्मान, राष्ट्रीय गौरव सम्मान, महात्मा गाँधी राष्ट्रीय पुरुस्कार, एपीजे अब्दुल कलाम नेशनल अवार्ड, स्वामी विवेकानंद प्रेरणा सम्मान, डॉ. भीमराव अंबेडकर नेशनल अवार्ड, उज्जवल भारत पुरस्कार, इंडिया प्राइड इन एजुकेशन पुरस्कार, सद्भावना सेवा सम्मान, World Talent Award, Global Prestigious Award, International Star award, Rising Bharat Star Award certificate of life time achivement, Droupadi Murmu presidential Honor for social justice, Honorary Doctorate degree by America international University, Kindness Ambassador of India Award, India Influencer Award, सहित अनेक अवार्ड एवं उपाधियों से भी सम्मानित किया है ।

प्रवचन और प्रेरणाएँ-

डॉ. आचार्य श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज अपने ओजस्वी, तार्किक और हृदयस्पर्शी और आध्यात्मिक प्रवचनों के लिए प्रसिद्ध हैं। आपके प्रवचन चौदह प्रदेशों संबंधी अनेकों जेल, स्कूल, विश्वविद्यालय, आश्रम आदि अनेक संस्थानों में भी हुए हैं। आचार्य श्री का उपदेश समाज में नशामुक्ति, शाकाहार, नैतिकता, अहिंसा और शिक्षा के प्रसार का माध्यम बन चुका है। आचार्य श्री विशेष रूप से जनमानस को सम्यग्दृष्टि बनाकर संयम, सदाचार और आत्मानुशासन की ओर प्रेरित करते हैं।

आध्यात्मिक योगी, बहुभाषाविद्, 20 शिष्यों के दीक्षादाता आचार्य श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज का जीवन तप, त्याग, साधना और सेवा का आदर्श उदाहरण है। समाज में उनकी साधना के माध्यम से आध्यात्मिकता, संस्कृति और मानवीय मूल्यों पर निरंतर प्रकाश फैल रहा है। गुरुदेव ने देश की संस्कृति की संपदा को उद्घाटित करते हुए कीर्तिमान स्थापित कर भारत देश को गौरवान्वित किया है।

आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज के करकमलों से दीक्षित शिष्य-शिष्याएँ(चेतन कृतियाँ) की सूची- मुनिश्री सुभद्रसागर जी, मुनिश्री महानसागर जी, मुनिश्री नमितसागर जी, मुनिश्री भाग्यसागर जी, मुनिश्री महत्सागर जी, मुनिश्री भास्वतसागर जी, मुनिश्री विलोकसागर जी, मुनिश्री विशोधसागर जी, मुनिश्री विबोधसागर जी, मुनिश्री विदितसागर जी, मुनिश्री विभोरसागर जी, मुनिश्री सजगसागर जी, मुनिश्री सानंदसागर जी, आर्यिका प्रतिभामति जी, आर्यिका राजितमति जी, आर्यिका सुयोगमति जी, आर्यिका मार्मिकमति जी, ऐलक अर्पणसागर जी, ऐलक हर्षितसागर जी।